E. Learning Study Material

By - Prof (Dr) YADWENDRA SINGH
VKS UNIVERSITY, ARA, BIHAR

B.A. Economics Hons Second year

Paper third

Problems of Cotton Textile Industry in India :-

सूतीवस्त्र उद्योग की वर्तमान स्थिति :-

सूतीवस्त्र उद्योग भारत का सबसे संगठित उद्योग है। पिछले चार दशकों के दौरान इस उद्योग का अभूतपूर्व विकास हुआ है। औद्योगिक पूँजी का लगभग 16 प्रतिशत और देश का 20 प्रतिशत औद्योगिक श्रम इस उद्योग में लगा हुआ है। इस उद्योग में कुल रोजगार 15 मिलियन श्रमिकों का है।

देश में वर्तमान में 1719 कपड़ा मिलें हैं, जिनमें 188 मिलें सार्वजनिक क्षेत्र में, 147 सहकारी क्षेत्र में और 1384 निजी क्षेत्र में है। लगभग तीन चौथाई मिलें कताई और शेष एक चौथाई मिश्रित मिलें ~~है~~ हैं। मिल क्षेत्र के अलावा, कई हजार छोटे कारखाने हैं जिनमें 5 से 10 करघे हैं। इनमें से कुछ में सिर्फ एक करघा है। ये कुटीर उद्योग के रूप में पारंपरिक हथकरघा पर आधारित हैं और इस उद्योग के विकेन्द्रीकृत

Scanned with CamScanner

क्षेत्र को प्रमाणित करते हैं।

विकेन्द्रीकृत क्षेत्र में लगभग 40 लाख इकाइयां और लगभग 5 लाख पावरलूम हैं।

तालिका A: भारत में सूतीवस्त्र (मिल क्लॉथ) का उत्पादन निम्न तालिका से स्पष्ट है:-

राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	उत्पादन Sq Mtr में	संपूर्ण भारत के उत्पादन का प्रतिशत
1. महाराष्ट्र	382257	39.38
2. गुजरात	321775	33.14
3. तमिलनाडु	64544	6.69
4. पंजाब	55784	5.75
5. मध्यप्रदेश	47305	4.87
6. उत्तरप्रदेश	32386	3.34
7. राजस्थान	28384	2.92
8. पांडिचेरी	24357	2.51
9. कर्नाटक	7222	0.74
10 केरल	6342	0.66
संपूर्ण भारत	970756	100.00

Scanned with CamScanner

तालिका-B: भारत में कपास धागे का मिल उत्पादन-2002-03 निम्न तालिका से स्पष्ट है :-

राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	मिलियन किलोग्राम में उत्पादन	संपूर्ण भारत का उत्पादन का प्रतिशत
1. तमिलनाडु	968	44.46
2. महाराष्ट्र	235	10.79
3. पंजाब	203	9.32
4. गुजरात	176	8.08
5. मध्यप्रदेश	98	4.51
6. हरियाणा	98	4.51
7. आंध्रप्रदेश	82	3.77
8. राजस्थान	78	3.58
9. कर्नाटक	66	3.03
10. उत्तरप्रदेश	46	2.12
11. हिमाचलप्रदेश	43	1.97
12. अन्य क्षेत्र/राज्य	84	3.86
सम्पूर्ण भारत	2177	100.00

Scanned with CamScanner

सूती वस्त्र उद्योग की समस्याएँ :- सूतीवस्त्र उद्योग भारत के सबसे महत्वपूर्ण उद्योगों में से एक है। लेकिन उद्योग कई समस्याओं से ग्रस्त है। कुछ प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं:-

1. कच्चे कपास की कमी - भारतीय सूतीवस्त्र उद्योग को देश विभाजन के परिणामस्वरूप काफी नुकसान उठाना पड़ा क्योंकि ज्यादातर लम्बे समय तक कपास उगाने वाले क्षेत्र पाकिस्तान में चले गये। कपास उत्पादन में वृद्धि के लिए बहुत से उपाय किए गये लेकिन इसकी आपूर्ति माँग से हमेशा कम ही रही। जिसके कारण लम्बे समय से कपास का आयात करना पड़ रहा है जिसका प्रतिकूल प्रभाव उत्पादन पर पड़ रहा है।

2. अप्रचलित मशीनरी :- भारत की अधिकांश मिलों वस्त्र निर्माण की मशीनरी काफी पुरानी है जिससे निम्न श्रेणी किस्म के वस्त्र का उत्पादन होता है साथ ही उत्पादकता भी काफी कम होती है। भारत में 20 प्रतिशत करघे ही स्वचालित है।

3. अधिकांश सूती वस्त्र उद्योग कारखानों को बिजली की आपूर्ति अनियमित एवं अपर्याप्त है जिसका उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

4. कुछ उन्नत देशों की तुलना में श्रम की उत्पादकता भारत में बहुत कम है। भारत में औसतन एक बुनकर लगभग 2 करघे को संभालता है तो वहीं जापान में एक बुनकर 30 करघों को तथा अमेरिका में एक बुनकर 60 करघों को संभालता है।

Scanned with CamScanner

5. औद्योगिक क्षेत्र में श्रमिक आन्दोलन काफी आम है। अतः लगातार होने वाले हड़तालों के कारण सूती वस्त्र उद्योग को काफी नुकसान हुआ है। 1980 की हड़ताल उल्लेखनीय है।

6. भारतीय कपास मिल उद्योग को पावरलूम और हथकरघा क्षेत्र, सिंथेटिक फाइबर और अन्य देशों के उत्पादों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का मुकाबला करना पड़ता है।

7. बीमार मिलें - उपर्युक्त कारक अकेले या एक साथ मिलकर इस उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं जिसके परिणामस्वरूप कई मिलें बीमार हो जाती है। 177 मिलों को बीमार मिलों के रूप में घोषित किया गया है।

लेकिन उपरोक्त समस्याओं के बावजूद 1960-61 के बाद से सूतीवस्त्र के निर्यात में काफी वृद्धि हुई है। सरकारी लक्ष्य के अनुसार 2010 तक 11 अरब डालर से 50 अरब डालर तक के वस्त्र एवं परिधान निर्यात को आगे बढ़ाना था जिसमें 25 बिलियन डालर कपड़ों का हिस्सा था। वस्त्र नीति 2000 में इन सारे लक्ष्यों का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार आज भी पूर्व की तरह सूतीवस्त्र वस्त्र उद्योग भारत का प्रधान उद्योग है।

—

Scanned with CamScanner